e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in

SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 9, September 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.524

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.524

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 9, September 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1309129|

करौली जिले में पर्यटन विकास – भविष्य की संभावनाएं एवं सुधार हेतु सुझाव

राजकुमार बैरवा[1], डॉ. हेमंत मंगल[2]

शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत[1]

आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत[2]

सारांश

पर्यटन किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजस्थान राज्य अपने ऐतिहासिक किलों, महलों, मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, और करौली जिला भी इन सभी गुणों से परिपूर्ण है। यह जिला धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ श्री मदन मोहनजी का मंदिर, महावीर जैन मंदिर, कल्याणजी मंदिर आदि जैसे कई प्रमुख धार्मिक स्थल स्थित हैं। इसके साथ ही करौली में करौली किला, रंजीत महल और काली देवी मंदिर जैसे ऐतिहासिक स्थल भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। हालांकि, करौली में पर्यटन की असीम संभावनाएं होते हुए भी अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है। यह शोध–पत्र करौली जिले में पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है, भविष्य की संभावनाओं को रेखांकित करता है और विकास हेतु आवश्यक सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत करता है। यह शोध–पत्र राजस्थान के करौली जिले में पर्यटन की वर्तमान स्थिति, उसकी निहित संभावनाओं तथा विकास के लिए आवश्यक सुधारों का विश्लेषण करता है। करौली धार्मिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है, जिसमें श्री मदन मोहन मंदिर, कैलादेवी मंदिर, करौली किला और कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य जैसे महत्वपूर्ण स्थल स्थित हैं। बावजूद इसके, करौली में पर्यटन अपेक्षित रूप से विकसित नहीं हो पाया है। शोध में वर्णनात्मक पद्धति अपनाई गई है तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से सूचनाएँ एकत्र की गई हैं। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि क्षेत्र में अधोसंरचना की कमी, प्रचार–प्रसार का अभाव तथा प्रशिक्षित जनशक्ति की अनुपलब्धता पर्यटन विकास में बाधक हैं। यह शोध भविष्य की पर्यटन संभावनाओं की ओर संकेत करता है, जैसे धार्मिक एवं इको–टूरिज्म का विकास, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संवर्धन, स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षण द्वारा रोजगार उपलब्ध कराना आदि। साथ ही, पर्यटन के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक सुधारात्मक सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं। यह शोध करौली जिले के पर्यटन विकास की दिशा में नीति–निर्माताओं, प्रशासन एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मूल शब्द – पर्यटन विकास, ऐतिहासिक धरोहर, सांस्कृतिक पर्यटन, इको–टूरिज्म, पर्यटन अवसंरचना

प्रस्तावना :

पर्यटन किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल स्थानीय संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा देता है, बल्कि क्षेत्रीय रोजगार सृजन, बुनियादी ढांचे के विकास और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को भी प्रोत्साहित करता है। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में पर्यटन का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्टता लिए हुए है। राजस्थान राज्य पर्यटन के क्षेत्र में विशेष स्थान रखता है, क्योंकि यह ऐतिहासिक किलों, राजसी महलों, लोक संस्कृति, रंगीन मेलों और धार्मिक स्थलों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है।

इसी क्रम में राजस्थान का करौली जिला भी एक ऐसा क्षेत्र है, जो पर्यटन की अपार संभावनाओं से समृद्ध है, किंतु अपेक्षित विकास से अब तक वंचित रहा है। करौली जिले का ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व अत्यंत गहरा है। यह जिला 15वीं शताब्दी में स्थापित हुआ था और करौली रियासत के गौरवशाली अतीत को संजोए हुए है। यहाँ स्थित श्री मदन मोहन मंदिर, जो भगवान श्रीकृष्ण का प्रमुख मंदिर है, प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। इसके अतिरिक्त कैलादेवी मंदिर, करौली किला, रंजीत महल, मच्छी भवन, और चम्बल नदी के आसपास का प्राकृतिक सौंदर्य करौली को पर्यटन की दृष्टि से एक बहुमूल्य धरोहर बनाते हैं।

करौली धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, विरासत पर्यटन और इको–टूरिज्म जैसे विविध रूपों के लिए उपयुक्त स्थल हो सकता है। फिर भी यह क्षेत्र अभी तक राज्य और राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर उचित स्थान नहीं बना सका है। इसका मुख्य कारण हैकृपर्याप्त अवसंरचना का अभाव, प्रचार–प्रसार की कमी, प्रशासनिक उपेक्षा, निजी निवेश की न्यूनता और स्थानीय समुदाय की सहभागिता का अभाव। इस शोध–पत्र का उद्देश्य करौली जिले की पर्यटन क्षमता का मूल्यांकन करते हुए यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार उचित नीतिगत हस्तक्षेप, संसाधनों के सुव्यवस्थित प्रयोग, तथा स्थानीय जनसहभागिता के माध्यम से इस जिले को एक समृद्ध पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता है। यह अध्ययन न केवल करौली जिले के समग्र विकास में सहायक हो सकता है, बल्कि अन्य ऐसे क्षेत्रों के लिए भी मॉडल प्रस्तुत कर सकता है जहाँ पर्यटन क्षमता तो है, परंतु उचित योजना के अभाव में उसका लाभ नहीं उठाया जा सका है।

शोध उद्देश्य :

1. करौली जिले में पर्यटन स्थलों की पहचान करना।
2. वर्तमान में उपलब्ध पर्यटन अवसंरचना का मूल्यांकन करना।
3. पर्यटन विकास में आ रही प्रमुख बाधाओं को समझना।
4. भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
5. पर्यटन विकास हेतु सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।

अनुसंधान पद्धति :

इस शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। जानकारी एकत्र करने के लिए द्वितीयक स्रोतों जैसे सरकार के पर्यटन विभाग की रिपोर्टें, स्थानीय प्रशासन के दस्तावेज, पूर्व प्रकाशित शोध–पत्र, समाचार पत्र, वेबसाइट आदि का उपयोग किया गया है। प्राथमिक जानकारी हेतु करौली जिले के पर्यटन स्थलों का अवलोकन एवं स्थानीय लोगों व पर्यटकों से अनौपचारिक साक्षात्कार भी लिए गए।

अध्ययन क्षेत्र :

करौली जिला राजस्थान राज्य के पूर्व का सीमावर्ती जिला है। यह जिला $26^{0}3'$ से $26^{0}49'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $76^{0}35'$ से $77^{0}26'$ पूवीदेशान्तर के मध्य स्थित है। जिले की सीमाएं उत्तर व उत्तर–पश्चिम में दौसा जिले, उत्तर–पूर्व में भरतपुर जिले, पूर्व में धौलपुर जिले, दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश तथा दक्षिण–पश्चिम में सवाईमाधोपुर जिले से लगती है। इस प्रकार करौली जिले से मध्य प्रदेश तथा भरतपुर धौलपुर, सवाईमाधोपुर तथा दौसा जिले की सीमायें मिलती है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5043 वर्ग किलोमीटर है जिसे 5 उपखण्डों में बांटा गया है। जिले मे 5 पंचायत समितियाँ एवं 6 तहसीलें 2 उप तहसीलें एवं 3 नगर पालिकायें हैं।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)
Impact Factor 8.524
|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|
Volume 13, Issue 9, September 2024
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1309129|

KEY MAP OF THE KARAULI DISTRICT OF RAJASTHAN

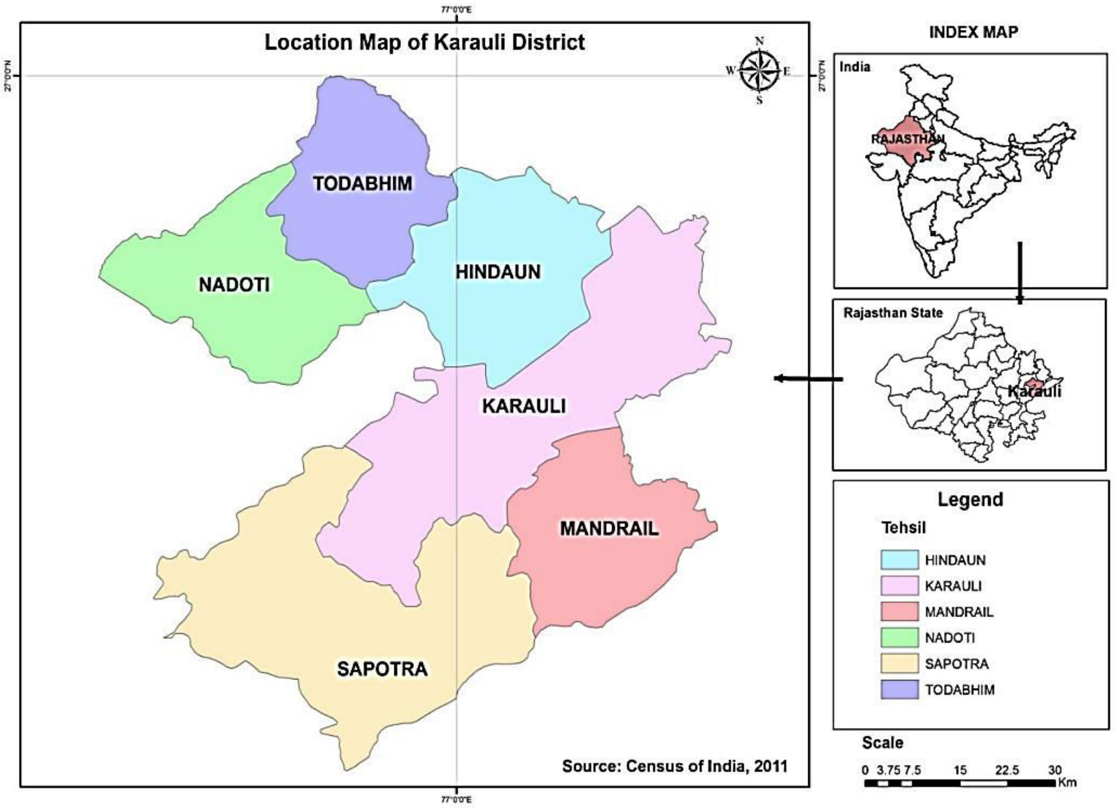

करौली जिले में पर्यटन की वर्तमान स्थिति :

करौली जिला राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है, जिसकी सीमाएँ धौलपुर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, धौलपुर और मध्यप्रदेश से लगती हैं। भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से यह जिला अत्यंत समृद्ध है। यहाँ की ऐतिहासिक धरोहरें, धार्मिक स्थल, प्राकृतिक वन संपदा और जनजातीय संस्कृति इसे एक संभावनाशील पर्यटन गंतव्य बनाते हैं। तथापि, वर्तमान समय में करौली का पर्यटन विकास अपेक्षाकृत धीमी गति से हो रहा है। इस अनुभाग में जिले की वर्तमान पर्यटन स्थिति का मूल्यांकन धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक और प्रबंधकीय दृष्टिकोण से किया गया है।

धार्मिक पर्यटन की स्थिति–

करौली धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है। यहाँ कई प्रमुख हिन्दू मंदिर स्थित हैं जो प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं–

- **श्री मदन मोहन जी मंदिर –** करौली शहर में स्थित यह मंदिर वृंदावन के प्रसिद्ध ठा. मदन मोहन जी से संबंधित है और भगवान श्रीकृष्ण के प्रति गहरी आस्था रखने वालों के लिए विशेष महत्व रखता है।

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|
Volume 13, Issue 9, September 2024
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1309129|

- **कैलादेवी मंदिर** – यह मंदिर करौली शहर से लगभग 23 किलोमीटर दूर है और यह शक्तिस्वरूपा माँ कैलादेवी को समर्पित है। चैत्र नवरात्र के दौरान यहाँ विशाल मेला लगता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं।
- **महावीर जैन मंदिर** –यह स्थान जैन तीर्थयात्रियों के लिए महत्वपूर्ण है और करौली के धार्मिक बहुलता को दर्शाता हैं। इन सभी धार्मिक स्थलों पर पर्याप्त श्रद्धालु पहुँचते हैं, किंतु व्यवस्थागत दृष्टि से सुविधाओं की कमी देखी जाती है, जैसे कि रुकने की व्यवस्था, साफ–सफाई, पर्यटन सूचना केंद्र आदि।

केला देवी मंदिर

श्री मदन मोहन जी मंदिर

ऐतिहासिक पर्यटन की स्थिति–

करौली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि समृद्ध और गौरवशाली रही है। यह क्षेत्र पूर्व में करौली रियासत का मुख्यालय था और यहाँ अनेक किले, महल तथा स्मारक स्थित हैं–

- **करौली किला** – यह किला 14वीं शताब्दी में बनवाया गया था और करौली राजघराने की स्थापत्य कला, चित्रकला व वैभव का प्रतीक है।
- **रंजीत महल** – यह महल करौली राजपरिवार के निवास के रूप में जाना जाता था। इसकी भित्तिचित्रकारी और वास्तुकला दर्शनीय है।
- **मच्छी भवन, गोपेश्वर महादेव मंदिर**, और अन्य राजसी स्मारक भी ऐतिहासिक पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। हालांकि, इन स्मारकों के संरक्षण, रख–रखाव और प्रचार–प्रसार की अत्यधिक आवश्यकता है। अधिकांश स्मारक उपेक्षित हैं और पर्यटकों को यहाँ मार्गदर्शन या गाइड सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

केला देवी वन्यजीव अभ्यारण

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|
Volume 13, Issue 9, September 2024
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1309129|

राजा गोपाल सिंह की छतरी

प्राकृतिक एवं वन पर्यटन की स्थिति–

- **कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य** – यह अभयारण्य रणथंभौर टाइगर रिजर्व से जुड़ा हुआ है और यहाँ कई प्रकार के वन्यजीव पाए जाते हैं, जैसे – चिंकारा, सांभर, भालू, तेंदुआ आदि। यह स्थान इको–टूरिज्म के लिए अत्यंत उपयुक्त है, परंतु अभी तक यहाँ मूलभूत सुविधाएँ जैसे पर्यटक लॉज, सफारी गाइड, सूचना केंद्र आदि उपलब्ध नहीं हैं।
- **चंबल नदी क्षेत्र** – करौली जिले की दक्षिणी सीमा पर बहती चंबल नदी अपने सुंदर घाटियों और दुर्लभ जलजीवों (जैसे घड़ियाल, डॉल्फ़िन) के लिए प्रसिद्ध है, परंतु इसे पर्यटक स्थल के रूप में विकसित नहीं किया गया है।

पर्यटन अवसंरचना की स्थिति–

- **सड़क एवं परिवहन** – करौली तक सड़क मार्ग से पहुंचना संभव है, लेकिन राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों की स्थिति कई स्थानों पर खराब है। रेलवे कनेक्टिविटी सीमित है और निकटतम हवाई अड्डा जयपुर या आगरा में है।
- **आवास सुविधा** – करौली में कुछ सीमित होटल और गेस्ट हाउस हैं, परंतु वे बड़े पर्यटन समूहों या उच्चस्तरीय पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर पाते।

- **सूचना एवं गाइड सुविधा** – पर्यटन सूचना केंद्रों, ट्रैवल गाइड्स, नक्शों और पर्यटन सहायता सेवाओं की भारी कमी है।
- **स्वच्छता एवं सुरक्षा** – धार्मिक मेलों में भीड़ तो होती है, परंतु सफाई, स्वास्थ्य सुविधा और आपातकालीन सेवाएँ सीमित रहती हैं।

प्रशासनिक एवं नीति पक्ष :

पर्यटन क्षेत्र के विकास में शासन और प्रशासन की भूमिका अत्यंत निर्णायक होती है। नीति निर्धारण, योजनाओं का क्रियान्वयन, अधोसंरचना विकास, पर्यटक सुरक्षा, स्थानीय सहभागिता एवं प्रचार–प्रसार ये सभी प्रशासनिक स्तर पर निर्धारित और संचालित होते हैं। करौली जिले में पर्यटन की अपार संभावनाएं होने के बावजूद नीति और प्रशासनिक प्रयास अपेक्षित रूप से प्रभावी नहीं रहे हैं। राजस्थान सरकार द्वारा करौली को पर्यटन सर्किट में शामिल तो किया गया है, परंतु अब तक यहाँ कोई विशेष परियोजना ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वित नहीं हुई है। केंद्र और राज्य की विभिन्न योजनाएँ जैसे स्वदेश दर्शन, प्रसाद योजना आदि के अंतर्गत करौली को समुचित लाभ नहीं मिल पाया है। राजस्थान सरकार का पर्यटन विभाग राज्य भर में पर्यटन विकास की नीतियाँ तैयार करता है। जिला प्रशासन इन नीतियों के कार्यान्वयन में सहायक होता है। करौली जिले के लिए भी पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा कुछ प्रयास किए गए हैं–

- करौली को धार्मिक पर्यटन सर्किट में शामिल किया गया है (जयपुर,करौली,ग्वालियर सर्किट)।
- कैलादेवी मंदिर और अन्य धार्मिक स्थलों के सुंदरीकरण के लिए सीमित बजट योजनाएँ स्वीकृत की गई हैं।
- जिला प्रशासन द्वारा "करौली महोत्सव" जैसे सांस्कृतिक आयोजनों की शुरुआत की गई है, लेकिन ये प्रयास अब तक सतही और असंगठित रहे हैं।

भविष्य की संभावनाएं :

करौली जिले में पर्यटन की वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि यहाँ धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक सभी प्रकार की पर्यटन संभावनाएँ मौजूद हैं, किंतु उनका समुचित दोहन नहीं हो पाया है। भविष्य में यदि योजनाबद्ध तरीके से प्रयास किए जाएँ, तो करौली पर्यटन के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है। निम्नलिखित संभावनाओं का विश्लेषण इस संदर्भ में किया गया है–

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.524

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 9, September 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1309129|

धार्मिक पर्यटन सर्किट में करौली की प्रभावी भागीदारी :

करौली जिले में श्री मदन मोहनजी मंदिर, कैलादेवी मंदिर, महावीर जैन मंदिर जैसे प्रतिष्ठित धार्मिक स्थल हैं जो पूरे उत्तर भारत में मान्यता प्राप्त हैं। इन स्थलों को वृंदावन, ग्वालियर, भरतपुर, मथुरा आदि अन्य धार्मिक केंद्रों से जोड़कर एक संगठित धार्मिक पर्यटन सर्किट बनाया जा सकता है। इससे पर्यटकों का आवागमन बढ़ेगा और जिले में पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। इसके लिए बस/ट्रेन रूट, धार्मिक पर्यटन गाइड, तीर्थ यात्रियों के लिए विश्राम गृह जैसी सुविधाओं का विकास अनिवार्य है।

इको–टूरिज्म के रूप में कैलादेवी अभयारण्य का विकास :

कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य रणथंभौर टाइगर रिजर्व से जुड़ा हुआ है और जैव विविधता से भरपूर है। यदि यहाँ सस्टेनेबल इको–टूरिज्म की नीति के तहत नेचर ट्रेल्स, बर्ड वॉचिंग, जंगल सफारी, और प्राकृतिक शिविर (nature camps) की व्यवस्था की जाए तो यह न केवल पर्यटकों को आकर्षित करेगा, बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार भी मिलेगा। इससे क्षेत्रीय जैव विविधता के संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा।

हेरिटेज पर्यटन का विकास :

करौली का ऐतिहासिक किला, रंजीत महल, मच्छी भवन आदि स्मारक उच्च स्थापत्य कला के उदाहरण हैं। इन स्थलों का संरक्षण कर उन्हें *हेरिटेज वॉक, गाइडेड टूर, लाइट एंड साउंड शो* जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचारित किया जा सकता है। यदि निजी निवेशकों को प्रेरित कर इन महलों को हेरिटेज होटल या सांस्कृतिक केंद्र में परिवर्तित किया जाए, तो पर्यटन का नया आयाम विकसित हो सकता है।

सांस्कृतिक एवं मेले–उत्सव आधारित पर्यटन की संभावना :

करौली में हर वर्ष आयोजित होने वाले कैलादेवी मेला, नवरात्र उत्सव, लोक–नृत्य और हस्तशिल्प मेलों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया जाए तो यह सांस्कृतिक पर्यटन के रूप में उभर सकता है। इससे न केवल स्थानीय शिल्पकारों और कलाकारों को मंच मिलेगा, बल्कि पर्यटक करौली की जीवंत संस्कृति से जुड़ सकेंगे।

चम्बल नदी और आसपास के क्षेत्र को एडवेंचर टूरिज्म से जोड़ना :

चम्बल नदी का क्षेत्र अभी तक पर्यटन मानचित्र पर बहुत कम चर्चित है, जबकि यहाँ घड़ियाल, डॉल्फिन, नदी घाटियाँ आदि जैविक और भौगोलिक विविधता उपलब्ध है। यदि यहाँ बोटिंग, रिवर ट्रैकिंग, नदी घाट ट्रेक, फोटोग्राफी टूर जैसे एडवेंचर और नेचर टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाए तो यह पर्यटन का नया केंद्र बन सकता है। इसके लिए सुरक्षित नौकायन व्यवस्था, प्रशिक्षित गाइड और रिसॉर्ट/होमस्टे की व्यवस्था आवश्यक होगी।

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|
Volume 13, Issue 9, September 2024
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1309129|

पर्यटन शिक्षा एवं स्थानीय युवाओं का प्रशिक्षण :

करौली जिले के युवा यदि *हॉस्पिटैलिटी, टूर गाइडिंग, संस्कृति संवाद, पर्यटन प्रबंधन आदि* क्षेत्रों में प्रशिक्षित किए जाएँ तो स्थानीय जनभागीदारी को बल मिलेगा। इससे पर्यटन पर आश्रित रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इसके लिए पर्यटन प्रशिक्षण केंद्र या कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किए जा सकते हैं।

डिजिटल एवं स्मार्ट टूरिज्म की दिशा में कदम :

आज के दौर में अधिकांश पर्यटक डिजिटल माध्यमों से जानकारी प्राप्त करते हैं। यदि करौली जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों की जानकारी, मानचित्र, वीडियो, वर्चुअल टूर आदि को एक वेबसाइट या मोबाइल एप के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए, तो यह घरेलू और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है। *क्यूआर कोड आधारित सूचना पट्ट, ऑनलाइन बुकिंग, और सोशल मीडिया प्रचार* इस दिशा में कारगर उपाय हो सकते हैं।

सार्वजनिक–निजी सहभागिता का प्रोत्साहन :

सरकारी संसाधनों की सीमाएं हैं, इसलिए पर्यटन विकास में निजी निवेश और साझेदारी का स्वागत आवश्यक है। यदि होटल, गाइड सेवाएँ, कैफे, लोक कला केंद्र, सफारी प्रबंधन आदि क्षेत्रों में निजी संस्थाओं को आकर्षित किया जाए, तो विकास की गति तीव्र होगी। इसके लिए जिला प्रशासन को नीतिगत रियायतें, भूमि आवंटन, और प्रशासनिक सहयोग सुनिश्चित करना होगा।

निष्कर्ष :

करौली जिले में पर्यटन के लिए धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक सभी प्रकार की संभावनाएं उपलब्ध हैं। आवश्यकता है तो केवल सुनियोजित योजना, संसाधनों की उपलब्धता और प्रचार–प्रसार की। यदि सही दिशा में प्रयास किए जाएं तो करौली न केवल राजस्थान का बल्कि भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गिना जा सकता है। इससे न केवल जिले का आर्थिक विकास होगा, बल्कि स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे। प्रशासनिक एवं नीति पक्ष में करौली जिले की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर रही है। यदि राज्य व केंद्र सरकार की योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन, स्थानीय प्रशासन की सक्रिय भागीदारी और समुदाय आधारित दृष्टिकोण अपनाया जाए, तो करौली को राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों की सूची में लाया जा सकता है।

सुधार हेतु सुझाव :

1. पर्यटन अवसंरचना विकासः सड़क, आवास, रेस्ट हाउस, शौचालय, चिकित्सा सुविधाएं और सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए।
2. प्रचार–प्रसारः करौली के पर्यटन स्थलों को डिजिटल मीडिया, टूरिज्म वेबसाइटों, ब्रोशर और विज्ञापनों के माध्यम से प्रचारित किया जाए।
3. स्थानीय सहभागिताः ग्राम पंचायतों व स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षण देकर गाइड, हॉस्पिटैलिटी और संस्कृति दूत के रूप में जोड़ा जाए।
4. धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों का कैलेंडर बनाकर उन्हें वार्षिक कार्यक्रमों के रूप में प्रचारित किया जाए।
5. निजी निवेश को बढ़ावाः होटल, ट्रैवल एजेंसी, एडवेंचर टूरिज्म आदि में निजी निवेश को आकर्षित करने हेतु नीतिगत रियायतें दी जाएं।
6. पर्यटन नीति में समावेशः राजस्थान पर्यटन नीति में करौली को प्राथमिकता वाले विकास क्षेत्र में शामिल किया जाए।

संदर्भ सूची :

1. राजस्थान पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्ट – 2022
2. "राजस्थान के पर्यटन स्थल", लेखक – डॉ. वी.एल. शर्मा, राजस्थानी ग्रंथ अकादमी
3. करौली जिला प्रशासन की वेबसाइटः https://karauli.rajasthan.gov.in
4. "Tourism Development in Rajasthan", Government of India Report (NITI Aayog), 2021
5. स्थानीय समाचार पत्र – दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका (2020–2024)
6. शर्मा, एम.पी. (2019). राजस्थान का धार्मिक पर्यटन, जयपुरः गुलाब पब्लिकेशन्

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details